APRIL 13 WEDNESDAY

हिन्दी विभाग
डॉ कविता कुमारी सिंह

P. G. II Sem

विषय – आलोचना की प्रमुख पद्धतियों का बोध भाग

आज जो नया साहित्य लिखा जा रहा है वह रचनाकार के आस-पास बिखरे हुए परिवेश, उससे उत्पन्न उसकी मनःस्थिति और मनुष्य की सामाजिक स्थिति से उत्पन्न प्रतिक्रियाओं का साहित्य है।

① सैद्धान्तिक आलोचना — जब विचार आत्म सजग होते हैं तो सिद्धान्तों का जन्म होता है। सिद्धान्त की स्थापना मूल रूप से दर्शन और विज्ञान के क्षेत्र की वस्तु है। वस्तुतः सैद्धान्तिक आलोचना उस मूल धरातल पर कार्यशील नहीं होती, जिस पर दर्शन या विज्ञान क्रियाशील रहते हैं। सैद्धान्तिक आलोचना का विषय साहित्य होता है, जीवन नहीं। यह आलोचना पद्धति साहित्य के धरातल पर काम करती है।

~~साहित्य~~ सैद्धान्तिक आलोचना के अन्तर्गत साहित्य के कविता, नाटक, निबन्ध, कहानी आदि विविध रूपों की रचना के संबंध में सामान्य

मानसिक तत्वों का अन्वेषण करना है। इस समीक्षा पद्धति में समीक्षक द्वारा लेखक व्यक्तित्व और परिवेश का समुचित अध्ययन किया जाता है। 'जैनेन्द्र' के उपन्यासों का विवेचन इसी समीक्षा के लिए इसी आलोचना पद्धति को अपनाया जा सकता है।

मार्क्सवादी समीक्षा पद्धति — इस समीक्षा पद्धति को प्रगतिवादी समीक्षा पद्धति भी कहा जाता है। मार्क्सवादी दर्शन में सम्पूर्ण सामाजिक संबंधों के मूल में अर्थ व्यवस्था को स्वीकार किया जाता है। वस्तु जगत की परिवर्तनशीलता के साथ-साथ अर्थ-व्यवस्था भी निश्चित रूप से परिवर्तित होती रहती है। मार्क्सवादी आलोचक साहित्य में समाज को साम्यवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने पर जोर देता है। ऐसे समीक्षक में डॉ० राम विलास शर्मा डॉ० विश्वम्भर नाथ उपाध्याय और डॉ० नगेन्द्र आदि प्रमुख हैं।

चरितमूलक आलोचना पद्धति — इस समीक्षा पद्धति में कृति विशेष की आलोचना से पहले मानस विश्लेषण पर अधिक बल दिया जाता है। इस समीक्षा पद्धति के अन्तर्गत

रचनाकार के व्यक्तित्व के प्रति भावुक दृष्टिकोण भी अपनाया जाता है। रचनाकार वातावरण और विचारधारा पर लेखक के व्यक्तित्व और जीवनदृष्टि का भी यह प्रभाव है, इसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या करना चरित्रमूलक आलोचना पद्धति की प्रमुख देन है।

<u>निर्णयात्मक आलोचना</u> — यह आलोचना पद्धति निर्णय देने में विश्वास करती है। इसमें आलोचक कुछ निश्चित नैतिक और साहित्यिक सिद्धान्तों को दृष्टि में रखकर अपना निर्णय दिया करता है। हिन्दी में ऐसी अनेक उक्तियाँ मिल जाती हैं — "सूर-सूर तुलसी शशि", तथा "सकल कृषण सतसई रची बिहारीलाल" उक्तियाँ निर्णयात्मक आलोचना शैली के अन्तर्गत किसी रचना विशेष पर कृति के मूल्यांकन को अपना लक्ष्य बनाया जाता है।

<u>सांस्कृतिक आलोचना</u> — सांस्कृतिक आलोचना समीक्षा का वह श्रेष्ठ रूप है जो जीवन के मूल तत्व सांस्कृतिक पर आधारित है। यह साहित्य की चौखट के भीतर बंधी नहीं रहती। हमारी दृष्टि में सांस्कृतिक आलोचना एक प्रकार से साहित्य में वह अभिव्यक्त जीवन और उससे सम्बन्धित विविध

मानदंडों पर आधारित पद्धति है। इस आलोचना पद्धति के प्रमुख समीक्षक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी को माना जाता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कह सकते हैं कि आलोचना कला है और ऐसी कला है जो जीवन और साहित्य दोनों को गति प्रदान करती है। आधुनिक युग में जब साहित्य अनेक नयी-नयी विधाओं में सज-संवर कर सामने आ रहा हो तब नित-नयी आलोचना पद्धति विकसित होते जाना भी स्वाभाविक है। दिनकर ने इस संबंध में लिखा है कि प्रत्येक नया कवि आलोचना से आलोचना की नयी कसौटी की मांग करता है क्योंकि आलोचक नये कवि को पुरानी कसौटी पर कसकर उसके साथ न्याय नहीं कर सकता। इसलिए जब भी कविता में नवीनता आती है तब आलोचना भी नवीन हो जाती है। कहने का तात्पर्य है कि हर नया सृजन किसी न में नयी आलोचना पद्धति को जन्म देता है और ऐस होते रहना अनिवार्य भी है और उपर्युक